International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 17-11-2019; Accepted: 18-11-2019
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 1; January 2020; Page No. 54-55

मध्यवर्गीय नारी का समकालीन सामाजिक जीवन परिवेशः समकालीन हिन्दी कहानियों के आधार पर एक अध्ययन

विनीता. वी
शोधार्थी, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचारचार सभा, एरणाकुलु, केरल, भारत

प्रस्तावना

आज भारतीय समाज तेज़ी से विकास की ओर अग्रसर है । प्राचीन रूढ़ियों और परंपराओं से विद्रोह कर नई पीढ़ी ने नया समाज बनाया । शिक्षा के प्रचार ने साक्षरता तो बढ़ाया लेकिन नवशिक्षित वर्ग में परंपरा और संस्कार, मानवीय मूल्यों और आर्दशों का विकास न कर सकी। वे परंपरा, रीति–रिवाज़ों, आदि को निरर्थक मानते हैं साथ ही इन्हें उन्नति के मार्ग में बाधक भी मानते हैं।

इसी कारण आज हमारे समाज मे पुरानी परंपराएँ बहुत कम देखने को मिलते हैं। संयुक्त परिवार जो हमारी परंपरा रही है वह धीरे–धीरे एकल परिवार का रूप लेने लगी जिससे समाज मे अशांति, ईर्ष्या, स्वार्थीपन, दुख, अकेलापन, हिंसा, आदि का प्रकोप बढ़ा। माता–पिता का संबंध, भाई–बहन का संबंध, दाम्पत्य संबंध जैसे पारिवारिक संबंध अब बोझ बनकर रह गए है । आधुनिकता के विकास ने तो जैसे परंपरा और मूल्यों का लोप ही कर दिया । डॉ. रतनकुमार पाण्डेय के अनुसार – ''मूल्य वे प्रतिमान हैं, जो मानव – व्यवहार को नापते हैं ।

समाज में मानव–जीवन और पारस्परिक व्यवहार के संबंध में कुछ धारणाएँ हाते ी
हैं । यही धारणाएँ स्थिर होकर मूल्य बन जाती हैं। मूल्य समाज की रीढ़ होते हैं, जिसके सहारे समाज अपना अस्तित्व बनाए रखता है। किसी समाज की संस्कृति का ज्ञान उस समाज में प्रचलित मूल्यों के आधार पर ही संभव हैं। मूल्यों का विकास समाज के साथ–साथ होता हैं और समाज–विघटन के साथ विघटित हो जाते हैं। मूल्य संक्रमण की यह क्रिया अनवरत चलती रहती है।''1

आधुनिकता में यदि मध्यवर्ग की बात करें तो अल्प आय, मॅहगाई, भौतिक सुखों की तलाश तथा लालसा ने मध्यवर्गीय जीवन में तनाव निर्माण किया है और मध्यवर्गीय समाज एक घुटन भरी जिंदगी जीने के लिए विवश हो गया है।

धन औरपद की चाह ने मध्यवर्गीय मानव को यांत्रिक जीवन प्रदान किया है। ऐसे में संवेदनशील व्यक्ति अपने लक्ष्य तक पहुॅचने में असमर्थ अनुभव कर रहा है। उसका मन, उसकी चेतना, उसकी आकाक्षाएँ, उसके सपने, उसका 'स्व' और उसका सब कुछ बिखरता दृष्टिगोचर होता है।

मध्यवर्गीय नारी समूह की बात करें तो वह भी प्रगति की ओर अग्रसर है। पर पुरुष प्रधान समाज उनके विकास में अक्सर बाधा बन जाता हैं। वह आज भी पुरुष प्रधान संस्कृति से छुटकारा पाने के लिए संघर्ष कर रही है। आज के समाज में मध्यवर्गीय नारी का जो रूप दिखाई देता है वह पतिभक्त या गृहस्थ पत्नी का ही है। अपने पति और परिवार की उन्नति में ही अपनी उन्नति देखती है। इसके कई उदाहरण हमें समकालीन हिन्दी कहानियों में देखने को मिलता हैं।

जैसे कि : भावना शेखर की कहानी 'बन्ध्या'; 'जुगनी' कहानी संग्रह से की नायिका 'अंबिका'। शादी के बाईस साल बाद भी वह निसंतान रही। बन्ध्या की मोहर उस पर लग चुकी थी। और जब दाम्पत्य जीवन खतरे में पड़ने लगा तो उसकी रक्षा हेतु उसने खुद अपने पति की दूसरी शादी करवा दी। इस रिश्ते में पैदा हुए पुत्र के नामकरण संस्कार में पूरे गॉव को भोज का निमंत्रण भी दिया। इस प्रकार अंबिका ने इस उधार के मातृत्व का मूल्य अपना स्त्रीत्व देकर चुकाया। उसे अपने पति से कोई शिकायत नही अपितु उनके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती हुई अपनी सहेली से वह कहती है कि ''उन्होंने इतने वर्षों तक बॉझ पत्नी का साथ दिया और दूसरे विवाह के बाद भी उसका परित्याग नहीं किया।''2. इस कहानी से साफ़ पता चलता है कि एक शादी–शुदा स्त्री का मॉ बनना हमारे समाज में कितनी अहमियत रखता है।

एक और उदाहरण हम मीना अग्रवाल जी के 'इस पार' कहानी संग्रह के 'अनुराग' कहानी में देख सकते है। इसकी नायिका 'प्राची' है जो 'कान्त' से प्रेम विवाह करती है। लेकिन जब प्राची को पता चलता है कि वह मॉ बनने में अक्षम है तो वह कान्त को इस बंधन से मुक्त कर देती है। वह अपनी सहेली राजुल से कहती है कि – ''तू नहीं जानती कान्त को दीवानगी की हद तक बच्चे की चाह है – उसके सपने टूटें – – यह सहना तो मेरे लिए और भी कीठन है। दिखावे के लिए एक साथ रहना प्रेम का अपमान करना हो जाता – – राजुल, तू सच
जान – – मुझे कोई दुख नहीं है, जितना पाया है उतना ही पर्याप्त ह मेरे लिए।''3.इस तरह अपनी खुशियों का त्याग कर ; एक पतिव्रत नारी का धर्म निभाती हुई कुछ नारियॉ भी आज हमारे समाज है।

उच्च शिक्षा प्राप्त कर आज की मध्यवर्गीय नारी के विचारों में भी काफी बदलाव आया है। अपने परिवार को आर्थिक रुप से सक्षम बनाने के लिए वह अब नौकरी करने लगी है। ऐसे में उन्हें पुरुषों के साथ मिलकर भी काम करना पड़ता है। इस स्थिति में कभी–कभी कुछ संबंध विवाह या विवाहेत्तर संबंध में परिणीत होते है । अतः प्रेम विवाह, अंतर्जातीय विवाह, अनैतिक संबंध, तलाक, आदि भी समाज में व्याप्त होने लगे है। इस प्रकार से स्थापित कई संबंधों के उदाहरण भी हमें समकालीन हिन्दी कहानियों में देखने को मिलता हैं।

जैसे किः सावित्री परमार की 'मौन कोलाहल' कहानी संग्रह की कहानी 'समय का उत्सव' में कामकाजी नायिका 'तनु'। वह एक मध्यवर्गीय परिवार की लड़की है और हर मॉ–बाप की तरह उसके माता–पिता भी उसकी शादी को लेकर चिंतित थे। जब भी कोई रिश्ता आता तो वह दहेज के नाम पर टूट जाता। यूँ तो तनु अपने दफ़्तर के वातावरण उतनी खुश नहीं थी पर वहॉ के प्रबंध विभाग के 'तापस' के साथ उसकी अच्छी दोस्ती थी। तनु के मॉ–बाप भी तापस जैसे शालीन और समझदार लड़के से मिलकर बहुत खुश हुए। ऐसे में तनु के घर में खुशी की लहर तब दौड़ पड़ी जब तापस अपनी मॉ को लेकर तनु का हाथ मॉगने आया। तापस के मॉ ने कहा–''आपकी सर्वगुण संपन्न और सुशील–सुंदर पुत्री मॉगने आई हूँ अपने बेटे के लिए। बड़ी कठिनाई से उसे तनु बिटिया पसंद आई हैं। हमको कुछ नहीं

चाहिए। आप तो बस हमारे मन की यह अभिलाषा पूरी करें। यही प्रार्थना करने आई हूँ।''4. समाज में ऐसे प्रेम विवाह तो आज कल बेहद व्याप्त है।

इसी कहानी संग्रह की 'बारिश में भीगती शाम' कहानी में 'रीनू' नामक पात्र ने अपने माता–पिता के इच्छा के विरुद्ध अपने साथ काम करनेवाले एक आदिवासी युवक माखन के साथ शादी करने का फैसला लिया। माखन के शिक्षित और कामकाजी होने के बावजूद, निम्न जाति में पैदा होने के कारण उसे रीनू के परिवार ने ठुकराया। पर अपने फैसले से रीनू पीछे नहीं हटती और कहती है कि – ''मैंने क्या ठेका लिया है इन्हें उम्र भर खिलाने का और खुद मोमबत्ती की तरह जलने पिघलने का।''5. इस तरह के अंतर्जातीय विवाह भी आजकल समाज में बहुत व्यापक है।

गीतांजली श्री की कहानी संग्रह 'वैराग्य' की कहानी 'नाम' की नायिका शादीशुदा और दो बच्चों की मॉ होने के बावजूद अपने साथ काम करनेवाले मित्र के साथ अनैतिक संबंध रखती है। वह स्वतंत्र विचारों वाली है और इसी कारण उस पर अपने इस बेवफाई का कोई असर नहीं होता। एक तरफ़ अपने प्रेमी से कहती है – ''तुम्हारी, सिर्फ़ तुम्हारी हूँ।'6. वहीं दूसरी तरफ़ अपने पति से कहती है – ''क्या तुम जानते नहीं किस क़दर मुझमें समाए हुए हो ?''7. अपने इस कर्म पर उसे कोई शर्मिंदगी महसूस होता ही नहीं, बल्कि उल्टा वह दोनों का साथ चाहती है और दोनों के साथ खुश है। वस्तुतः ऐसे अनैतिक संबंध भी आज हमारे समाज में सर्वव्याप्त है।

धार्मिकता की दृष्टि से देखा जाए तो आज की मध्यवर्गीय नारी में बहुत परिवर्तन आया है। उसके धार्मिक चिंतन और विचार नए बन गए है। इसी कारण से वह अब पति को परमेश्वर नहीं अपितु अपना साथी मानना पसंद करती है। साथ ही वह रीति–रिवाज़ों, पूजा–पाठ, आदि रश्मों पर अधिक बल नहीं देती। अंधविश्वासों के दायरे से दूर हो रही है। वह धार्मिक बातों में उलझना पसंद नहीं करती, पर साथ–ही वह किसी दूसरे के विश्वास में हड़चन भी नहीं बनती। वह अपनी जिंदगी अपने विश्वासों के बल पर जीना चाहती है। भारतीय संस्कृति की बात करें तो, इस ढोर को संभालने का काम भी सदियों से नारी को ही दिया गया है। पर अब यह भी शायद कटता जा रहा है। और यहीं कारण है कि एक सुदृढ़ परिवार हमें आज के समाज में बहुत कम देखने को मिलता है। आज की आधुनिक नारी तो शिक्षा अर्जित कर उन्नति के मार्ग पर चल रही है और वह परंपरागत सांस्कृतिक, धार्मिक कर्मकांड़ में अपनी जिंदगी को सीमित रखना नहीं चाहती। इसके भी कई उदाहरण हमें समकालीन हिन्दी कहानियों में देखने को मिलता हैं।

जैसे किः उषा प्रियंवदा की कहानी संग्रह 'जिंदगी और गुलाब के फूल' की कहानी 'दृष्टिदोष' का नायक 'साम्ब'एक परंपरागत संयुक्त परिवार का अंग है और उसकी पत्नी 'चन्द्रा' आधुनिक विचारोंवाली है। आधुनिक विचारोंवाली बहू और परंपरा के अनुसार चलने वाले परिवार के बीच अक्सर संघर्ष होते रहते है। चन्द्रा के बेटे के नामकरण के अवसर पर बात और भी बिगड़ी। चन्द्रा की सास पोते का नाम स्कन्द रखना चाहती थी और मॉ राकेश। इस बात को लेकर पति–पत्नी के बीच झगड़ा हुआ और दोनों ने समझदारी से अलग होने का फैसला लिया। चन्द्रा नौकरी करने लगती है और बेटे की परवरिश की जिम्मेदारी साम्ब ले लेता है। चन्द्रा को कभी अपनी गलती का अहसास नहीं होता। उसे लगता है कि, '' साम्ब ने उसका जीवन ही नही बिगाड़ा, उससे उसका पुत्र भी छीन लिया है और वह पति, पुत्र,पिता, भाई, सबके होते हुए भी, इस समय थके–हारे, घर जानेवाले लोगों की भीड़ में एक थी।'8. इससे स्पष्ट होता है कि आधुनिक समाज में रिश्ते बहुत ही आसानी से टूट जाते है।

संक्षेप में हम कह सकते है कि मध्यवर्गीय नारी का समकालीन सामाजिक जीवन परिवेश बहुत ही आधुनिक बन गया है। वह घर चलाने के लिए नौकरी करने लगी है। वह अब समाज में किसी की बेटी, बहन, पत्नी, नहीं बल्कि अपने ही नाम से पहचाने जाने में गरिमा महसूस करती है। इसी कारण आज समाज में

ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं है जहॉ मध्यवर्गीय नारी ने अपनी पहचान न बनाई हो। पर साथ ही वह शायद रिश्तों की अहमियत और परिवार का महत्व भी भूलने लगी है। 'लिव इन रिलेशनशिप' और 'स्ववर्गरति' जैसी मूल्यभ्रष्ट सभ्यता को अपनाने से उसने भारतीय संस्कृति को भी गहरी चोट पहुँचाई है। इन सब कारणों से सामाजिक संतुलन के बिगड़ने का डर है। वह बाह्य रूप से उन्नति तो कर रही है पर आंतरिक रूप से अवनति की ओर जाती दिखाई देती है। मध्यवर्गीय नारी के इस बदलते सामाजिक जीवन परिवेश के यथार्थ को समकालीन हिन्दी कहानीकार अपनी कहानियों में प्रकट करने में सफल हुए है और अब भी यह प्रक्रिया सक्रिय रूप से चल रही है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. रतनकुमार पाण्डेय – समकालीन कविता, प्रकृति और परिवेश – पृ.सं.–72
2. भावना शेखर – जुगनी – 'बन्ध्या' – पृ.सं.–83
3. मीना अग्रवाल – इस पार – 'अनुराग' – पृ.सं.–106
4. सावित्री परमार – मौन कोलाहल – 'समय का उत्सव' – पृ. सं.–38
5. सावित्री परमार – मौन कोलाहल – 'बारिश में भीगती शाम' – पृ.सं.–88 6. गीतांजली श्री – वैराग्य – 'नाम' – पृ.सं. –56
6. गीतांजली श्री – वैराग्य – 'नाम' – पृ.सं.–60
7. उषा प्रियंवदा – जिंदगी और गुलाब के फूल – 'दृष्टिदोष' – पृ.सं.–119